Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019

SPECIAL ISSUE- 83

खण्ड - दो

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में नारी विमर्श

विशेषांक संपादक :
डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.
अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 83 (खण्ड- 2) : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-714
January-2

समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी विमर्श

डॉ.प्रमोद परदेशी
दादा पाटील महाविद्यालय,कर्जत
जि.अहमदनगर

समकालीन शब्द का अर्थ है-"एक कालीय,एक ही समय में होनेवाला।"[1]आधुनिक हिन्दी साहित्य में समकालीनता के लिए समसामायिक शब्द का प्रयोग किया जाता है।किसी कालखंड अथवा समय के परिवेश से प्रभावित साहित्य अथवा सम समानान्तर लिखा जानेवाला साहित्य जिसमें समय बोध उभरकर स्पष्ट हुआ हो उस परिवेश की समस्त गतिविधियाँ और प्रवृत्तियाँ चित्रण करनेवाला साहित्य समकालीन कहा जाता है और समय के साथ परिवर्तनशील सामाजिक यथार्थ को तथा अपनी अनुभूतियों को रचना के माध्यम से अभिव्यक्त करनेवालाही समकालीन रचनाकार माना जाता है। अधिकतर समकालीन रचनाकारों ने परिवर्तनशील सामाजिक यथार्थ और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उपन्यास के माध्यम की है।समकालीन हिन्दी उपन्यास लेखन में महिला उपन्यासकारों की अपनी विशिष्ट भूमिका रही है। सन १९६० के बाद समकालीन सामाजिक और निम्न मध्यवर्गीय जीवन शैली को ध्यान में रखकर हिन्दी महिला लेखिकाओं ने हिन्दी उपन्यास साहित्य को समृध्द किया। उसमें उषा प्रियंवदा,कृष्णा सोबती,मृदुला गर्ग,चित्राा मृगल,मृणाल पाण्डेय, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी,आदि महिला उपन्यासकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

समकालीन महिला उपन्यासकरों में उषा प्रियंवदा नाम विशेष उल्लेखनीय है। एक सजग महिला लेखिका होने के कारण सामाजिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नारी जीवन के बनते-बिघडते संबध, उदासी, उब, अकेलापन,शोषण और घूटन कायथार्थ चित्रण किया है। उषा प्रियंवदा के उपन्यासों में नारी जीवन के समस्त आयामों का चित्रण है।

'पचपन खम्भे लाला दीवारे' उषा प्रियंवदा जी का पहला उपन्यास है। जिसमें उन्होंने नारी शोषण के नये आयाम को चित्रित किया है। वर्तमान में नारी पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर, स्वतंत्र और स्वाभिमानी बनना चाहती है। किन्तु उसका मूल्य उसे चुकाना पडता है। उपन्यास में एक मध्यवर्गीय परिवार में आर्थिक संस्कार से जुझनेवाली और अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का दमन करनेवाली नायिका सुषमा की कहानी है। उपन्यास की नायिका सुषमा उन नौकरपेशा लडकियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो घरेलू समस्याओं की चक्की में पिस्ते हुए अपनी विवाह की उम्र गवाँ बैठती है।सुषमा परिवार में बडी होने के कारण पारिवार चलाने हेतु उसे नौकरी करनी पडती है। वह कॉलेज में अध्यापिका एवं गर्ल्स होस्टल में वार्डन का काम करती है। वह तैंतीस वर्ष की हो चुकी है। यथा समय उसकी शादी होना आवश्यक है किन्तु कमाऊ होने के कारण टाल दी जाती है। पहले एक पडोसी के साथ और बाद में नील से उसके भावनात्मक संबंध जुड जाते है। किन्तु अपनी वैयक्तिक भावनाओं और इच्छाओं को बली देकर वह पारिवारिक जिम्मेदारियों में जुड जाती है। वह जीवन चाहकर भी खुश नहीं रह पाती। नील के चले जाने पर उसके जीवन में अंधकार-सा छा जाता है। वह टूट जाती है। अन्ततः उसके जीवन में नैराश्य आ जाता है। सुषमा के संदर्भ में डॉ. देसाई जी कहते है," यह पचपन खम्भोंवाली की नियती है। जीवन में सबकुछ बदल जायेगा, बह जायेगा, नहीं बदलेगी केवल सुषमा कॉलेज के उस रंग की भाँति खम्भे उसके जीवन का भी एक रंग होगा। कमाना और कमाकर पैसे घर भेजना।"[2] माता-पिता के मृत्यु के बाद परिवार के अन्य सदस्यों के साथ तालमेल न बैठने के कारण अकेलापनउसके समूचे अस्तित्व को निगलने लगता है। अविवाहितनारी जीवन के उत्तर अवस्था में पीडा,अकेलापन एवं संत्रास उसे जीने नहीं देता।भीतर ही भीतर उसे घूटना पडता है।

Scanned with CamScanner

समकालीन हिन्दी महिला उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती प्रसिध्द लेखिका हैं। उन्होंने नारी की व्यथाओं पर खुलकर लेखनी चलायी। उनके 'डार से बिछुडी' उपन्यास में पाशो नामक भोली-भाली, अल्हड युवती की विवशता, असहाय स्थिति कीदुःखभरी कहानी चित्रण है।उपन्यास की नायिका पाशो पुराने संस्कारों में पली-बढी तथा उसका ही जीवन में निर्वाहनकरनेवाली लडकी है। इसी कारण वर्तमान परिवेश से वह अपने आप को अलग पाती है। माँ के चरित्र हिनता के कारण उसे अनेक दुःख सहने पडते है। वह एक से दूसरी जगह टिक नहीं पाती है कि पुरूष की वासना का शिकार हो जाती है। पाशो के जीवन में दीवानजी, बरकत और मंझले पुरूष एक के बाद एक आते है परन्तु किसीसे सच्चा प्रेम नहीं मिलता। अंत में फिरगिंयों का तक उसे शिकार होना पडता है। उसकी अवस्था फुटबॉल के समान हो जाती है। "फुटबॉल की सी नियती नारी की अबला जीवन हाय! तुम्हार यही कहानी।"[३] उपन्यास के अंत में पाशो अपने भाई के साथ रिवाज में जुडने का प्रयास करती है। किन्तु समाज उसे जीने नहीं देता। उसका मान-सम्मान, सुख-सुहाग, यहाँ तक की बच्च तक छिन लिया जाता है। उसे अपने जीवन में दुःख, पीडा और यातनाओं के शिवाय कुछ नही मिलता।

चित्रा मृगदल आधुनिक हिन्दी की बहुचर्चित कथा साहित्यकार है। अपने व्यक्तिगत अनुभवों को उन्हों उपन्यासों का विषय बनाया । 'एक जमीन अपनी' उपन्यास चित्रा मृगदल जी का नारी संघर्ष का दास्तावेज है। महानगरों में स्त्री सिर्फ भोग की वस्तू बनकर रह गई है। उपन्यास का कथ्य मुंबई महानगर के चकाचौंध में विज्ञापन का ग्लैमर, मूल्यहीन प्रतियोगिता, पाश्चात्य जीवन शैली का अन्धानुकरण, खुले आम देह व्यापार आदि के बीच नारी के प्रति समाज का बदलता दृष्टिकोण आदि का यथार्थ चित्रण किया है। इस परिवेश में नारी कितनी भी सुसंस्कारित और योग्य क्यों न हो, उसे भोग्य की वस्तु के रूप में देखा जाता है। प्रेमिका और पत्नी के रूप में महानगरीय नारी की स्थिति कितनी त्रासद है, इसका प्रमाण 'एक जमीन अपनी' उपन्यास है।

उपन्यास में सुधांशु और अंकित पति-पत्नि है। उन्होंने अपने दाम्पत्य जीवन को समाप्त दिया है। सुधांशु घर छोडकर चली जाती है,क्योंकि उसका पति अंकित शरीर सुख से अधिक कुछ माँग करता है। सुधांशु उसे पुनः मिलने का प्रयास करता है, तब वह कहती है,"औरत बोनसाई का पौधा नहीं है, जब जी चाहे उसकी जडे काटकर वापस गमले में रोप दिया जाय।"[४] उपन्यास कीदूसरीपात्र -नीता अपने आत्मसम्मान को बचाने के लिए अपनी पुत्री का विचार न करते हुए आत्महत्या करती है।'एक जमीन अपनी' उपन्यास में महानगरीय माहौल में नारी अपने स्वाभिमान ,आत्मसम्मान को बचाते हुए जीवन व्यतीत करती है। वह अपनी अस्मिता को जिंदा रखना चाहती है।

समकालीन महिला उपन्यासकारों में मृदुला गर्ग जी अपने बेरोकटोक लेखन शैली के कारण प्रसिध्द है। उनके लेखन का केंद्र नारी समस्या रहा है। उनके प्रसिध्द उपन्यास 'वंशज' में नारी द्वारा पुरानी परम्पराओं और मान्यताओं को तोडकर नयी परम्परा के निर्वाहन करने का प्रयास और लडके के साथ लडकी के अधिकार की चर्चा की गई है। लडकी को पिता की संपत्ति में समान अधिकार कानुनी है परन्तु सामाजिक वास्तविकता कुछ और ही है।लडकी होने के कारण उसे पिता की संपत्ति में हक नहीं मिलता।"सारी योग्यता होने के बावजूद लडकी अपने पिता के संपत्ति का उत्तराअधिकारी नहीं,क्योंकि वह लडकी है और योग्यताओं के अभाव में भी लडका पैतृक संपत्ति का अधिकारी बनता है, क्योंकि वह लडका है।"[५] उपन्यासकार यही वास्तविकता सामने लाती है। आज अनेक परिवारों में यही परिस्थिति पायी जाती है। स्वयं पिता ही अपनी संतान होने के बावजूद लडकी को अपनी संपत्ति में हक नहीं देना चाहता। उपन्यास में न्यायप्रिय जज अपने बेटे से सुधीर से उसके गलत बर्ताव के कारण प्यार नहीं करते उनकी अपनी बेटी रेवा से अधिक लगाव है। किंतु जब उत्तराधिकारी की बात आती है तब जिसे नकारा और नालायक समझते है, उस सुधीर को अपना उत्तराधिकारी बनाकर अपनी सारी जायदाद सौंप देते है। 'वंशज' उपन्यास में लेखिका रेवा के माध्यम से न्याय और अधिकार की माँग करती है।

Scanned with CamScanner

नारी अस्मिता के लिए अधुनिक सामाजिक परिवेश में कलम चलानेवाली समकालीन महिला उपन्यासकारों मे मृणाल पाण्डेय जी का नाम महत्वपूर्ण है। 'रास्तों पर भटकते हुए'मृणाल पाण्डेय जी का प्रसिध्द उपन्यास है। उपन्यास की मूल कथा के संदर्भ में उन्होंने लिखा है। "किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के रहस्यमयी रखैल का यह मासूम गर्विला बच्चा उंगली पकडकर मंजरी को अपने साथ लेकर उन रास्तों पर भटकता है, जहाँ पैर रखने पर वह कतराती रही है...बेटी की स्मृति के सहारे तब मंजरी एक स्याह पाताल गंगा के दर्शन करती है। जो देश केजलघर में कई रहस्यमय छुपा रही हैं...दो मौतों की तफतीश के बहाने मंजरी अपने निजि जीवन, विवके एवं अपने अतरात्मा की परिक्रमा करते हुए रास्तों पर भटकती है।"[६]

प्रस्तुत उपन्यास के प्रात्र अपने मार्ग से भटके हुए हैं। नायिका मंजरी तो शुरू से लेकर अंत तक भटकती रहती है। उसके पति और ससुर अपने कुकर्मों के कारण भटकते रहते है। उपन्यास के कई पात्र मार्ग भ्रष्ट है और कई पात्र चरित्र भ्रष्ट है।

समकालीन महिला उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा जी के 'चाक' उपन्यास में अन्याय, अत्याचार और दमन के विरूध्द संघर्ष और विद्रोह करनेवाली नारी का चित्रण है। नारी पर होनेवाले अन्याय,अत्याचार को समाज हमेशा अनदेखा करता है लेकिन जब नारी उसके विरोध में संघर्ष करती हैं तो उसे सफलता निश्चित मिल जाती है। मैत्रेयी पुष्पा जी के 'चाक' उपन्यास की नायिका सारंग इसका प्रमाण है। इसके संदर्भ में डॉ. रामचंद्र माली कहते है,"चााक हिन्दी साहित्य जगत का, नारी विद्रोह और स्वाभिमान का प्रतिक है। हिन्दी जगत के उपन्यास साहित्य के नायिका प्रधान उपन्यासों में सारंग एक ऐसा नाम है,जो परिवर्तन के चाक पर सवार होकर अपने व्यक्तित्व को नया रूपांतरीत करता है।"[७] 'चाक' उपन्यास में अन्यायी, सामाजिक व्यवस्था के विरूद्धलढकर परिवर्तन लाने का चित्रण है।

निष्कर्षः-

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि, समकालीन महिला उपन्यासकार समाज में पनप रहे महिलाओं के जटिल प्रश्नों के प्रति संवेदनशील है। उनके उपन्यासों का मुख्य विषय नारी समस्या रहा है।समकालीन महिला उपन्यासकार अपने अधिकार और कर्तव्यों प्रति प्रतिबद्ध है।समयानुरूप होनेवाले सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के फलस्वरूप नारी की बदलती जीवनशैली, बदलते जीवनमूल्य, नारी षोषण, पीड़ा संत्रास, घूटन आदि का यथार्थ चित्रण समकालीन महिला उपन्यासकारों ने किया है। नारी चेतना को जाग्रत करके शोषण, अन्याय, अत्याचार के विरूद्ध आवाज उठायी।अपने अधिकारों के प्रति सजग रहकर सामाजिक न्याय, स्वतंत्रता और समानता लाने का प्रयास समकालीन महिला उपन्यासकारों ने किया है।

संदर्भ ग्रंथ-

१. हिन्दी विश्वकोश २३वाँ खण्ड,नगेंद्रनाथ वसु,पृ.५८८
२. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास,डॉ.पारूकान्त देसाई,पृ.११
३. एक नजर कृष्णा सोबती, रोहिणी,पृ.५८
४. अपनी अपनी जमीन,चित्रा मृगदल,पृ.४७
५. मृदुला गर्ग के कथा साहित में नारी,डॉ.रमा नवले,पृ.८६
६. रास्तों पर भटकते हुए, मृणाल पाण्डेय,पृ.०१
७. अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी, डॉ.रामचंद्र माली,पृ.६१
८. समकालीन महिला लेखन, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा

Scanned with CamScanner